10 क्रिया
(Verb)

काम को ही क्रिया कहा जाता है।

बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं।

लड़कियाँ खेल रही हैं।

चिड़िया दाना चुग रही है।

पिल्ला दौड़ रहा है।

जल में बतख तैर रही हैं।

झरना बह रहा है।

इन वाक्यों में रंगीन शब्द काम के करने या होने का बोध करा रहे हैं। ये क्रिया शब्द हैं। क्रिया का अर्थ है- काम। क्रिया के बिना वाक्य पूरा नहीं होता है।

जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उसे क्रिया कहते हैं।

धातु- किसी क्रिया के विभिन्न रूपों को देखा जाए तो उनमें एक अंश ऐसा होता है, जो रूप में निहित होता है; जैसे- उठेगा, उठ रहा है, उठना, उठ चुका होगा आदि। इन सबमें 'उठ' सभी क्रिया रूपों में समान रूप से आ रहा है। अत: 'उठ' धातु है। मूल धातु में 'ना' प्रत्यय लगाकर सामान्य क्रिया बनती है। जैसे-

उठ + ना = उठना पढ़ + ना = पढ़ना खेल + ना = खेलना

अर्थ की दृष्टि से क्रिया के भेद

क्रिया

सकर्मक

अकर्मक

1. सकर्मक क्रिया–

अंशु ने सेब खाया।
(कर्त्ता) (कर्म) (क्रिया)

माँ ने खाना बनाया।
(कर्त्ता) (कर्म) (क्रिया)

नीता दूध पी रही
(कर्त्ता) (कर्म) (क्रि

जब क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है, तब क्रिया सकर्मक होती है; जैसे–अंशु ने सेब खा खाने की क्रिया का फल 'सेब' पर पड़ रहा है अथवा यह कहें कि सेब खाया जा रहा है। अतः 'खाया' क्रिया है।

सकर्मक क्रिया की पहचान– कोई क्रिया सकर्मक है या नहीं इसे पहचानना सरल है; जैसे–माँ बनाया।

'बनाया' क्रिया के लिए प्रश्न करें–क्या बनाया? उत्तर प्राप्त होता है–खाना।

इसलिए खाना सकर्मक क्रिया है।

क्रिया के साथ कर्म है या नहीं, इसकी पहचान करने के लिए क्रिया के साथ 'क्या' प्रश्न करने उत्तर मिल जाता है तो क्रिया सकर्मक होती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि–

जिस क्रिया में कर्म पाया जाता है, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।

2. अकर्मक क्रिया–

आयुष पढ़ता है।
(कर्त्ता) (क्रिया)

प्रणव गाता है।
(कर्त्ता) (क्रिया)

पक्षी उड़ रहे हैं
(कर्त्ता) (क्रिय

इन वाक्यों में 'पढ़ता है', 'गाता है', 'उड़ रहे हैं' क्रिया हैं। इनके कर्म नहीं है। इसलिए ये क्रिया हैं।

अकर्मक क्रिया की पहचान– अकर्मक क्रिया को पहचानना बहुत आसान है; जैसे–आयुष पढ़ता है 'पढ़ता है' क्रिया के लिए प्रश्न करें–क्या पढ़ता है? उत्तर मिला–पता नहीं। इस तरह से क्या पढ़ता का उत्तर नहीं मिला। इसका अर्थ हुआ कि 'पढ़ता है', क्रिया का कर्म नहीं है।

अतः हम कह सकते हैं कि–

जिस क्रिया में कर्म नहीं पाया जाता है, वह अकर्मक क्रिया कहलाती है।

अकर्मक क्रिया पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'क्या', 'कहाँ', 'किसे', आदि प्रश्नवाचक शब्द लगने पर यदि उत्तर 'नहीं' मिलता है तो क्रिया अकर्मक होती है।

हिंदी में अकर्मक से भी सकर्मक क्रिया बनती है; जैसे–

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
मरना	मारना	लुटना	लुटाना
घिरना	घेरना	खुलना	खोलना
उठना	उठाना	कटना	काटना
उड़ना	उड़ाना	चलना	चलाना

ध्यान दें–

1. यदि वाक्य में कर्म उपस्थित न भी हो, किंतु क्रिया को इसकी अपेक्षा हो तो वह क्रिया सकर्मक क्रिया होगी; जैसे–

क. प्रणव पढ़ता है। (पुस्तक – कर्म की आवश्यकता)

ख. नीता खा रही है। (आम – कर्म की आवश्यकता)

2. **सकर्मक से अकर्मक में परिवर्तन–**

क. सकर्मक क्रिया – राजेश पुस्तक पढ़ता है।
अकर्मक क्रिया – राजेश पढ़ता है।

ख. सकर्मक क्रिया – नेहा कुर्सी पर बैठी है।
अकर्मक क्रिया – नेहा बैठी है।

ग. सकर्मक क्रिया – पिता कार्यालय से आए।
अकर्मक क्रिया – पिता जी आए।

घ. सकर्मक क्रिया – आकाश घर चला गया।
अकर्मक क्रिया – आकाश चला गया।

ङ. सकर्मक क्रिया – अंशु खो-खो खेल रही है।
अकर्मक क्रिया – अंशु खेल रही है।

अब तक जाना

- जिन शब्दों के द्वारा काम के करने या होने का बोध हो, वे शब्द क्रिया कहलाते हैं।
- क्रिया के कर्म के आधार पर दो भेद हैं– क. सकर्मक क्रिया, ख. अकर्मक क्रिया।
- जिन क्रियाओं को कर्म को आवश्यकता पड़ती है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं।
- जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।